15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अमर बाबा आया है तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र देने, अभी तुम तीनों कालों और तीनों लोकों को जानते हो"

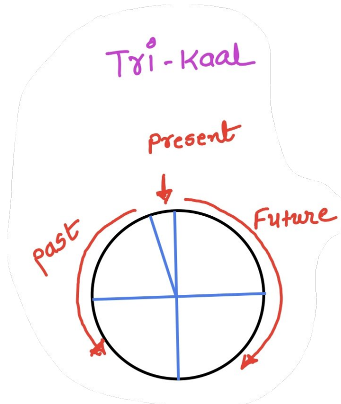

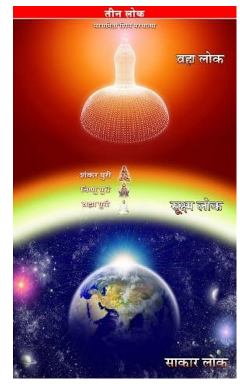

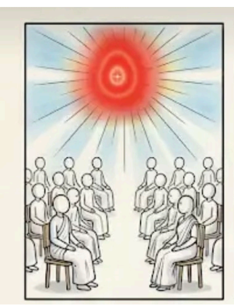

प्रश्नः- रूहानी बाप रूहों को वर्सा किस आधार पर देते हैं?

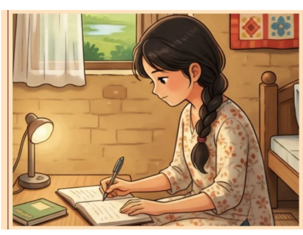

उत्तरः- पढ़ाई के आधार पर। जो बच्चे अच्छी रीति पढ़ते हैं देह-अभिमान को छोड़ देही-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते हैं, उन्हें ही बाप का वर्सा मिलता है। लौकिक बाप सिर्फ बच्चों को वर्सा देते लेकिन पारलौकिक बाप का सम्बन्ध रूहों से है, इसलिए रूहों को वर्सा देते हैं।

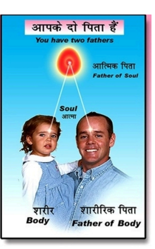

गीतः-भोलेनाथ से निराला... Click

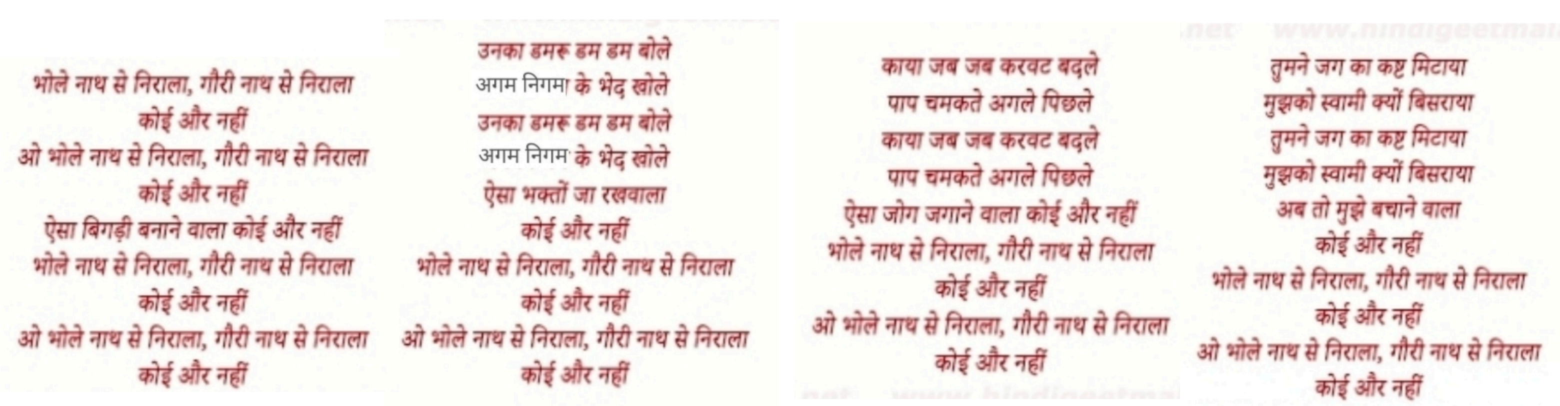
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ऐसा बिगड़ी बनाने वाला कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

उनका डमरू डम डम बोले
अगम निगम के भेद खोले
उनका डमरू डम डम बोले
अगम निगम के भेद खोले
ऐसा भक्तों का रखवाला
कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

काया जब जब करवट बदले
पाप चमकते अगले पिछले
काया जब जब करवट बदले
पाप चमकते अगले पिछले
ऐसा जोग जगाने वाला कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

तुमने जग का कष्ट मिटाया
मुझको स्वामी क्यों बिसराया
तुमने जग का कष्ट मिटाया
मुझको स्वामी क्यों बिसराया
अब तो मुझे बचाने वाला
कोई और नहीं
भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं
ओ भोले नाथ से निराला, गौरी नाथ से निराला
कोई और नहीं

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

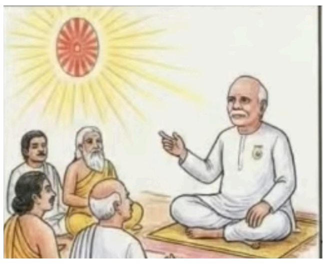

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चे, रूहानी बाप से अमरकथा सुन रहे हैं - इस मृत्युलोक से अमरलोक में जाने के लिए। निर्वाण-धाम को अमरलोक नहीं कहा जाता। अमरलोक जहाँ तुम अकाले मृत्यु को नहीं पाते हो इसलिए उनको अमरलोक कहा जाता है। रूहानी बाप जिसको अमरनाथ कहा जाता है। जरूर अमरलोक में ले जाने के लिए मृत्युलोक में कथा सुनायेंगे। तीन कथायें भारत में ही मशहूर हैं। अमरकथा, सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा। भक्ति मार्ग में तो तीजरी का अर्थ कोई समझते ही नहीं हैं। ज्ञान का तीसरा नेत्र सिवाए ज्ञान सागर अमर बाबा के कोई दे न सके। यह भी झूठी कथायें सुनाते हैं। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे अब जान गये हैं कि हमको अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल रहा है, जिस तीसरे नेत्र से तीनों कालों, तीनों लोकों को तुम जान चुके हो। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन के आदि-मध्य-अन्त को भी जान चुके हो इसलिए बच्चे अपने को त्रिकालदर्शी भी समझते हैं। तुम मीठे-मीठे बच्चों बिगर सृष्टि में कोई त्रिकालदर्शी नहीं होता। तीनों कालों अर्थात्

Exclusive Authority of Shiv baba

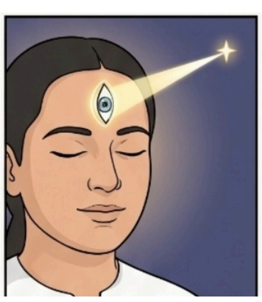

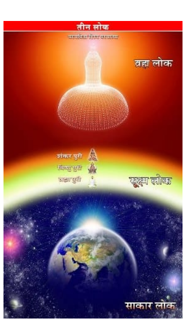

15-06-2026

Example ली 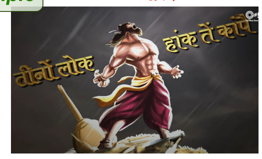

"बापदादा" मधुबन

Point to be Noted

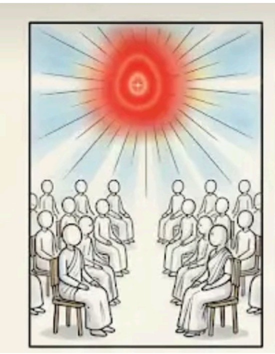

सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को बहुत जानते हैं। परन्तु तीनों कालों के आदि-मध्य-अन्त को कोई नहीं जानते। अब मीठे-मीठे रूहानी बच्चे रूहानी बाप से सुन रहे हैं। हम उनके बच्चे बने हैं। एक ही बार तुम रूहानी बच्चों को रूहानी बाप मिला है। रूहों को पढ़ाते हैं और सब देह-अभिमानी होने के कारण कहते हैं - मैं यह पढ़ता हूँ। मैं यह करता हूँ। देह-अभिमान आ जाता है। अभी इस संगम पर रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को कहते हैं तुम अच्छी रीति पढ़ो। बाप से हर एक बच्चा वर्सा लेने का हकदार है क्योंकि सब रूहानी बच्चे हो ना। लौकिक सम्बन्ध में सिर्फ बच्चा वर्से का हकदार बनता है। इस पारलौकिक सम्बन्ध में सभी बच्चों, रूहों को वर्सा मिलता है। अमरनाथ की भी कथा सुनाते हैं। कहते हैं पार्वती को पहाड़ी पर, कन्दराओं में जाकर कथा सुनाई। यह तो रांग है ना। अब तुम बच्चे जानते हो झूठ क्या है, सच क्या है। सच तो जरूर सच्चा बाबा ही सुनायेंगे। बाप एक ही बार सच सुनाए सचखण्ड

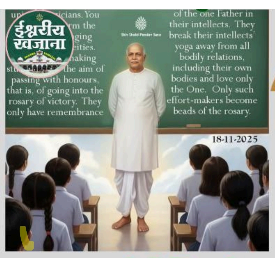

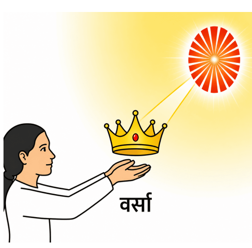

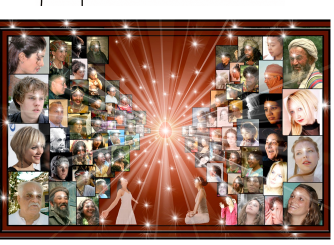

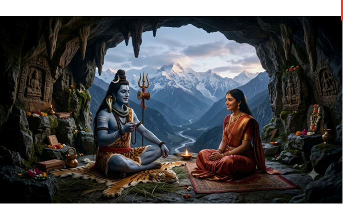

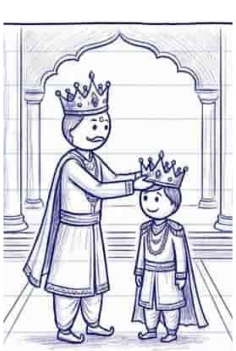

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

का मालिक बनाते हैं। तुम जानते हो इस झूठ खण्ड को आग लगनी है। यह जो कुछ देखने में आता है, यह नहीं रहेगा। समय बाकी थोड़ा है। यह शिवबाबा का ज्ञान यज्ञ है। जैसे लौकिक सम्बन्ध में भी बाप यज्ञ रचते हैं। कोई रूद्र यज्ञ रचते हैं, कोई गीता यज्ञ। कोई रामायण यज्ञ रचते हैं। यह है शिवबाबा वा रूद्र ज्ञान यज्ञ। यह अन्तिम यज्ञ है।

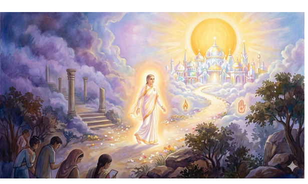

तुम जानते हो हम अमरपुरी में अब जा रहे हैं। बाकी थोड़े मिनट का अब रास्ता है। कोई भी मनुष्य को यह पता नहीं है। वह तो कह देते हैं - मुत्युलोक से अमरलोक में जाने के लिए 40 हजार वर्ष अभी पड़े हैं। अमरलोक सतयुग को कहा जाता है। तुम बच्चों को अभी बाबा सम्मुख बैठ अमरकथा, तीजरी की कथा, सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं। भक्ति मार्ग में क्या-क्या होता है, वह तो देखा। भक्ति मार्ग का कितना विस्तार है। जैसे झाड का बड़ा विस्तार होता है वैसे ही भक्ति

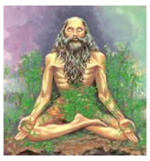
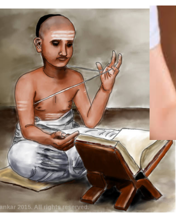

का भी बड़ा कर्मकाण्ड का झाड है। यज्ञ, व्रत, नेम, जप-तप आदि कितना करते हैं। इस जन्म के भक्त तो बहुत बैठे हैं। मनुष्यों की वृद्धि होती रहती है। तुम भक्ति मार्ग में आये हो तब से दूसरे धर्म स्थापन हुए हैं। हर एक का अपने धर्म से कनेक्शन है। हर एक की रसम-रिवाज अलग है। भारत अमरपुरी था, भारत अब मृत्युलोक है। तुम आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे। परन्तु अब पतित होने के कारण तुम अपने को देवता कहला नहीं सकते। यह तुमको भूल गया है कि हम सो देवता थे। जैसे कहते हैं क्राइस्ट ने हमारा धर्म स्थापन किया तो हमारे क्रिश्चियन चले आये हैं। ऐसे नहीं कि यूरोपियन धर्म के हैं। वैसे तुम हिन्दुस्तान में रहने वाले अथवा भारत में रहने वाले देवी-देवता धर्म के हो। परन्तु अपने को देवता कहला नहीं सकते। समझते हो हम तो पापी नीच, कंगाल, विकारी हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्य दु:खी होते हैं तो बाप को ही पुकारते हैं। यह सिर्फ तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो कि जिस बाप को पुकारते आये हैं वह हमको बेहद का वर्सा देने के लिए अमरकथा सुना रहे हैं।

Past
Present

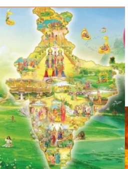

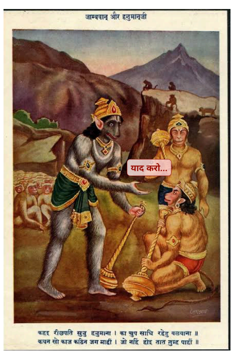

Point to be Noted
Rational Point

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

How lucky and Great we are...!

दुनिया उसे ढूंढ रही है और वो हमें मिल गए तो क्या लेकिन हमारे हो चुके है।

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

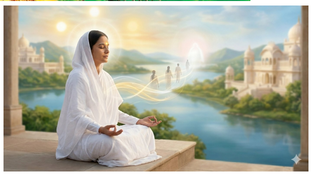

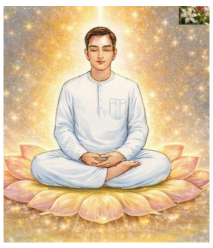

हम अमरपुरी के मालिक बनने वाले हैं। अमरपुरी को स्वर्ग कहा जाता है। तुम कहेंगे हम स्वर्गवासी बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। कलियुग में मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। अब उसने कोई स्वर्ग में जाने के लिए पुरुषार्थ थोड़ेही किया? तुम तो पुरुषार्थ कर रहे हो अमरपुरी वैकुण्ठ में जाने के लिए। पुरुषार्थ कराने वाला कौन? अमर बाबा, जिसको अमरनाथ भी कहा जाता है। इस यज्ञ को पाठशाला भी कहा जाता है। दूसरे कोई पाठशाला को यज्ञ नहीं कहा जाता। यज्ञ अलग रचे जाते हैं, जिसमें ब्राह्मण लोग बैठ मन्त्र पढ़ते हैं। बाप कहते हैं यह तुम्हारा कॉलेज भी है, यज्ञ भी है, दोनों इकट्ठे हैं। तुम जानते हो इस ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है, इसमें सारी दुनिया स्वाहा हो जानी है। फिर नई दुनिया बननी है, इसका नाम ही है महाभारी महाभारत लड़ाई। इस जैसी लड़ाई और कोई होती नहीं। कहते हैं युद्ध में मूसलों से लड़ाई हुई। तुम्हारे साथ लड़ाई तो है नहीं। इसको महाभारत लड़ाई क्यों कहते हैं? भारत में तो एक ही धर्म होता है ना।

Click
story

मौत तो बाहर है। यहाँ लड़ाई की तो बात नहीं है। बाप समझाते हैं - तुम्हारे लिए नई दुनिया चाहिए तो जरूर पुरानी दुनिया का विनाश होगा।

Simple Logic

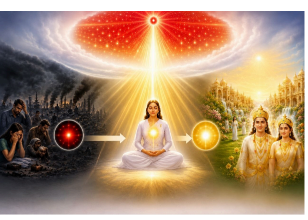

प्रजापिता ब्रम्हा

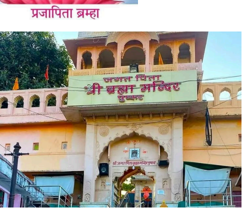

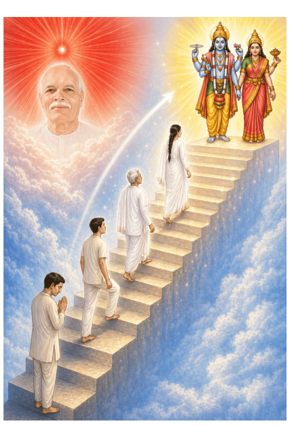

तुम बच्चों की बुद्धि में विराट रूप का भी सारा ज्ञान है। यह भी समझते हो जो कल्प पहले आये थे वही आयेंगे देवता बनने के लिए। बुद्धि का काम है। हम जितने ब्राह्मण बने हैं, अब फिर देवता बनेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा भी गाया हुआ है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं इसलिए ब्रह्मा को प्रजापिता कहते हैं। परन्तु कैसे, कब रचते हैं? यह कोई नहीं जानते। क्या शुरू में मनुष्य नहीं हैं जिनको रचते हैं? बुलाते ही हैं पतित-पावन आओ। तो जब मनुष्य पतित होते हैं तब तो बाप आते हैं। दुनिया को बदलना है। तुमको बाप नई दुनिया का लायक बनाते हैं। अभी सब तमोप्रधान पुरानी दुनिया में हो फिर सतोप्रधान बनना है। बाप ने समझाया है - हर एक मनुष्य

Point to be Noted

Po धारणा सेवा M.imp.

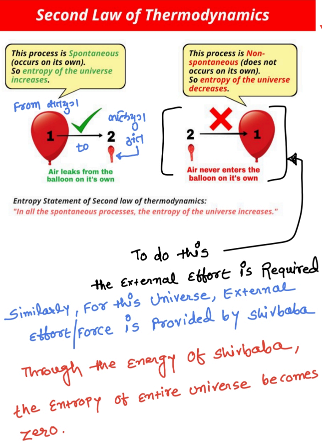

सतोप्रधान
सतो
रजो
तमो
तमोप्रधान

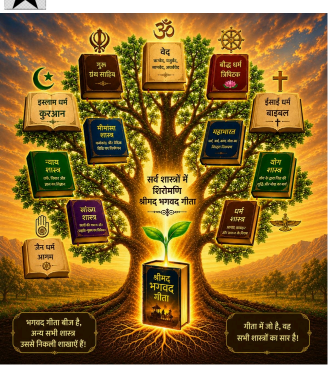

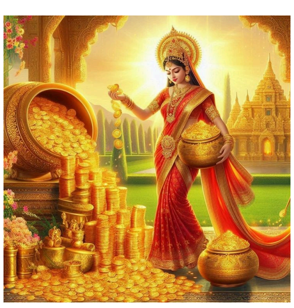

m.m.m....imp.

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मात्र को, हर चीज़ को सतो-रजो-तमो में आना होता है। दुनिया नई से पुरानी जरूर होती है। कपड़ा भी नया पहनते हैं फिर पुराना होता है। तुमको ज्ञान मिला है, सच्ची सत्य नारायण की कथा अभी तुम सुन रहे हो। गीता है सर्वशास्त्रमई शिरोमणी। बाकी हैं उनके बाल बच्चे। जैसे ब्रह्मा की वंशावली, वैसे गीता है मुख्य। ऊंच ते ऊंच माँ-बाप, बाकी हैं बच्चे। अभी माँ बाप से वर्सा मिल सकता है। बाकी कितने भी शास्त्र पढ़ें, कुछ भी करें, वर्सा मिल न सके। करके जो शास्त्र पढ़ते हैं, उनकी बहुत कमाई होती है। वह तो हो गया अल्पकाल के लिए। यहाँ तुम बच्चे सुनते हो तो कितनी कमाई करते हो - 21 जन्म के लिए, विचार करो। वह एक सुनायेंगे, सब उनको पैसे देंगे। यहाँ बाप तुम बच्चों को सुनाते हैं - तुम 21 जन्म के लिए कितने साहूकार बनते हो। वहाँ सुनाने वाले की जेब भरती है। भक्ति आदि करना प्रवृत्ति मार्ग वालों का काम है। तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले। तुम जानते हो - स्वर्ग लोक में हम पूज्य थे। नहीं तो 84 जन्मों का हिसाब कहाँ से आये? यह है रूहानी

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

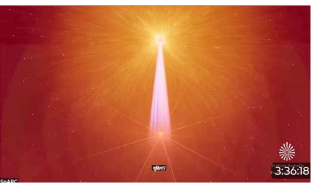

ज्ञान, जो सुप्रीम रूह ज्ञान सागर से मिलता है। पतित-पावन बाप ही सबके सद्गति दाता हैं। हम बच्चों को अमरकथा सुना रहे हैं। जन्म-जन्मान्तर झूठी कथा सुनते आये हो। अब सच्ची कथा सुनकर तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। चन्द्रमा को 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है। सूर्य के लिए नहीं कहते हैं।

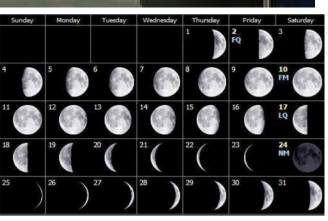

तुम जानते हो हम आत्मायें भविष्य में सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे। फिर आधकल्प के बाद उन्हों में खाद पड़ जाती है। अभी तुम समझते हो हम फिर से सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न.... सो देवता फिर से बन रहे हैं। हम आत्मायें पहले अपने घर जायेंगे फिर हम शरीर धारण कर सो देवता बनेंगे फिर चन्द्रवंशी घराने में आयेंगे। 84 जन्मों का हिसाब-किताब चाहिए। किस युग में, किस वर्ष में कितने जन्म हुए, बाप ने 84 जन्मों की सच्ची-सच्ची कथा अब सुनाई है।

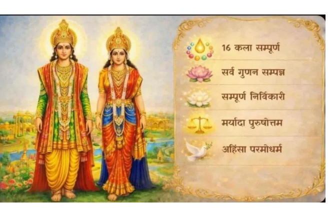

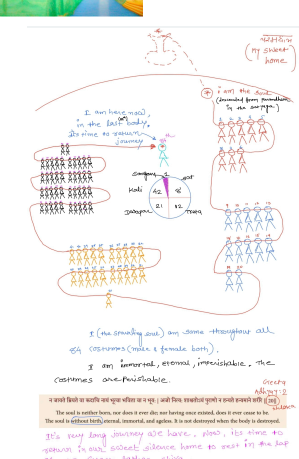

Points: ज्ञान 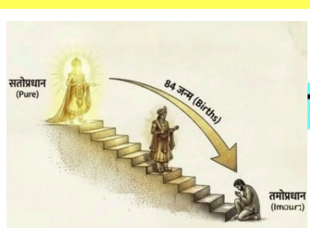

सेवा M.imp.

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुम बच्चों को कहेंगे तुम भारतवासी 84 जन्म लेते हो। अपने को एक तो ब्राह्मण समझना पड़े। मम्मा बाबा कहते हो ना। वर्सा शिवबाबा से लेते हो, ब्रह्मा बाबा द्वारा। ब्रह्मा भी उनका हो गया। ब्रह्मा से वर्सा मिल न सके। यह भी भाई हो गया। यह शरीर-धारी है ना। तुम सब बच्चे वर्सा उनसे लेते हो। इन (ब्रह्मा) से नहीं। जिससे वर्सा नहीं पाना है, उनको याद नहीं करना है। एक शिवबाबा को ही याद करना है। उनको ही कहते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे। तुम इनके पास आते हो तो बुद्धि में रहता है, हम शिवबाबा के पास जाते हैं। याद शिवबाबा को ही करना है। आत्मा बिन्दी है, उसमें 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। आत्मा भ्रकुटी के बीच में रहती है। उड़ती भी सेकेण्ड में है, मैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। भ्रकुटी के बीच जाए विराजमान होता हूँ। बुद्धि में समझ है - हमारी आत्मा ऐसी है। सतयुग में तो कोई ऐसी चीज़ देखने की आशा नहीं रहती। आत्मा को देख सकते हैं, दिव्य दृष्टि से। कोई इन आंखों से देखने की बात नहीं है। भक्ति मार्ग में ही साक्षात्कार करते हैं।

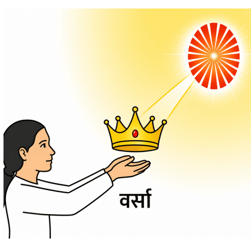

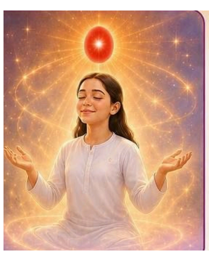

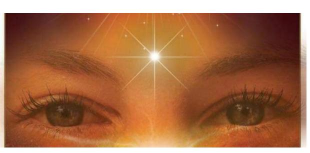

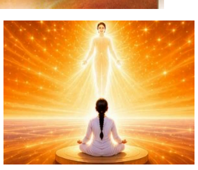

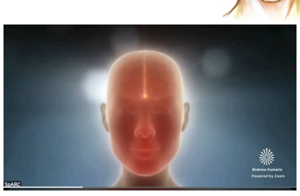

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

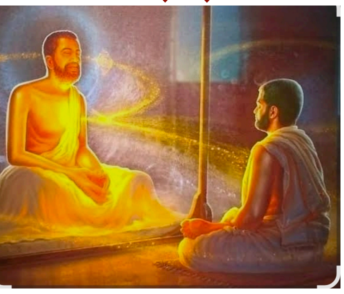

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जैसे रामकृष्ण का शिष्य विवेकानंद था, उसने बताया है मैं सामने बैठा था तो उनकी आत्मा निकल मेरे में प्रवेश हो गई। ऐसे कोई होता नहीं है। आत्मा कैसे एक शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करती है, यह सब बातें तुम बच्चों को समझाई जाती हैं। अभी तुम समझते हो हम अमरलोक में जाने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं, अमरलोक में हम जन्म लेंगे। वहाँ हम गर्भ महल में होंगे। यहाँ तो गर्भजेल में बहुत त्राहि-त्राहि करते हैं। अब आधाकल्प के लिए बाबा तुमको सब दु:खों से छुड़ाते हैं। तो कितना प्यार से ऐसे बाप को याद करना चाहिए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

तुम बच्चे जानते हो पुनर्जन्म तो किसका भी बंद नहीं होता। अपना-अपना पार्ट सब बजाते हैं। आवागमन से कभी छूटना नहीं है। इस समय करोड़ों मनुष्य हैं और भी आते रहेंगे, पुनर्जन्म लेते रहेंगे। फिर फर्स्ट फ्लोर खाली होगा। मूलवतन है

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

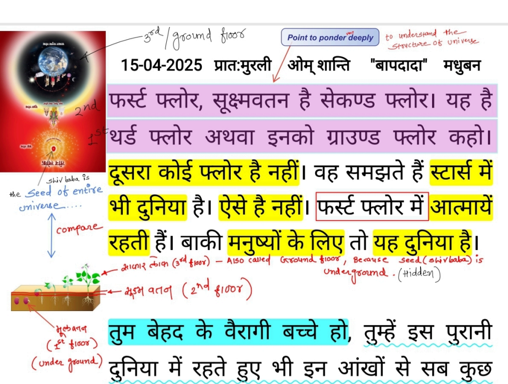
15-04-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फर्स्ट फ्लोर, सूक्ष्मवतन है सेकण्ड फ्लोर। यह है थर्ड फ्लोर अथवा इनको ग्राउण्ड फ्लोर कहो। दूसरा कोई फ्लोर है नहीं। वह समझते हैं स्टार्स में भी दुनिया है। ऐसे है नहीं। फर्स्ट फ्लोर में आत्मायें रहती हैं। बाकी मनुष्यों के लिए तो यह दुनिया है।

तुम बेहद के वैरागी बच्चे हो, तुम्हें इस पुरानी दुनिया में रहते हुए भी इन आंखों से सब कुछ

Points: ज्ञान योग धार M.imp.

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

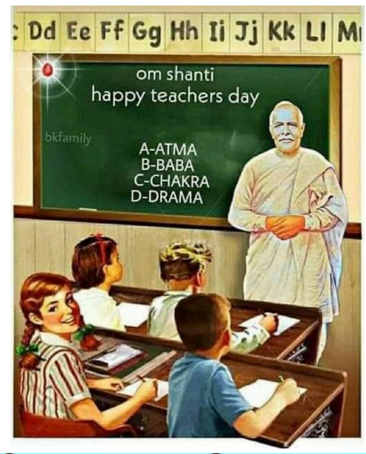

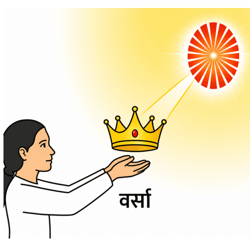

1) स्वयं को रूह समझ, रूहानी बाप से पढ़कर पूरा वर्सा लेना है। सचखण्ड का मालिक बनने के लिए सच्ची कथा सुननी और सुनानी है।

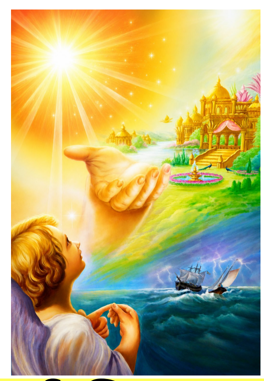

2) जिस बाप से बेहद का वर्सा मिलता है, उसे ही याद करना है। किसी देहधारी को नहीं। इस पुरानी दुनिया को आग लगनी है इसलिए इसे देखते भी नहीं देखना है।

As Certain as Death

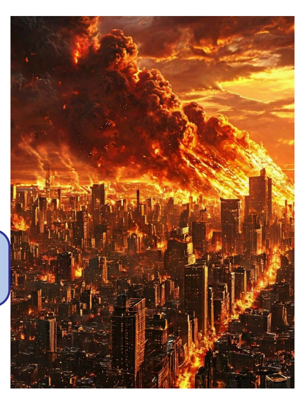

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

15-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- साइलेन्स की शक्ति द्वारा अपने रजिस्टर को साफ करने वाले लोकप्रिय, प्रभू प्रिय भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

जैसे साइन्स ने ऐसी इन्वेन्शन की है जो लिखा हुआ सब मिट जाए, मालूम न पड़े। ऐसे आप साइलेन्स की शक्ति से अपने रजिस्टर को रोज़ साफ करो तो प्रभू प्रिय वा दैवी लोक प्रिय बन जायेंगे।

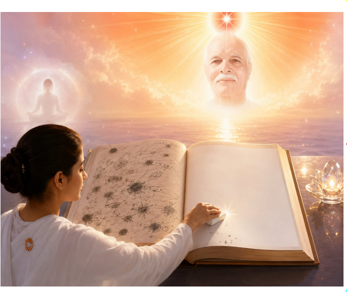

सच्चाई सफाई को सभी पसन्द करते हैं इसलिए एक दिन के किये हुए व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म की दूसरे दिन लीक भी न रहे, बीती को बीती कर फुलस्टाप लगा दो तो (1) रजिस्टर साफ रहेगा और (2) साहेब राज़ी हो जायेगा।

For self: For others:

स्लोगन: व्यर्थ संकल्प करना वा दूसरों के व्यर्थ संकल्प चलाने के निमित्त बनना - यह भी अपवित्रता है।

Subtle Point to understand

कर्मों की गुह्य गति

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

सदा हर्षित रहने के लिए

अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।

मन, वाणी, कर्म में सरलता और सहनशीलता यह दोनों आवश्यक हैं।

Both are Equally Important

अगर सरलता है, सहनशीलता नहीं तो भी श्रेष्ठ नहीं।

Mind very well...

सरलता के साथ सहनशीलता है तो शक्ति स्वरुप कहा जाता है।

शक्तियों के चित्रों में सरलता और सहनशीलता दोनों ही गुण दिखाते हैं।

Interim Result

अभी की रिजल्ट में कहाँ सहनशीलता अधिक है, कहाँ सरलता अधिक है।

अब इन दोनों को समान बनाओ।

Call of time/समय की पुकार

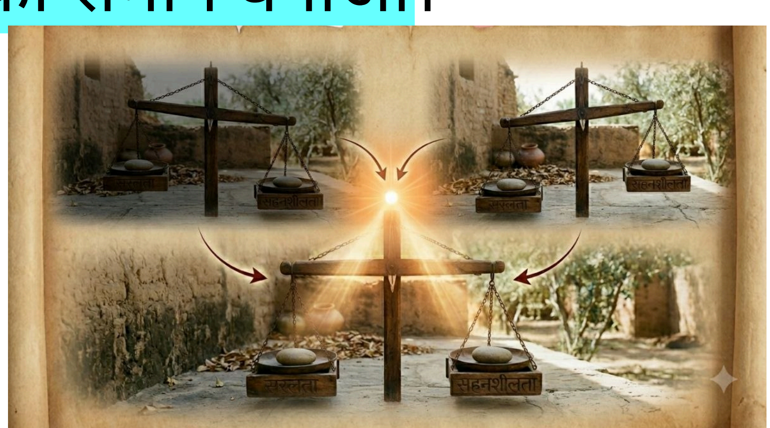

Points: ज्ञान

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26 → Click

All अव्यक्त इशारे May 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

ओम शांति ,
1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली ने एक नई पहल शुरू की है इस Mind map के रूप में।

इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि
आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रैवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।

मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन। और मुरली है सर्व समर्थ साधन - क्योंकि मुरली है सर्व शक्तिमान शिवबाबा का मन। तो मुरली के मंथन में व्यस्त रहना अर्थात उस Supreme powerhouse से अपने मन की तार को जोड़ना।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

Click

इस mind map में,
मुरली की Main Body को ही ध्यान में लिया गया है।
अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।

SM
15.06.2026

ज्ञान

- **आत्मा**
  - मीठे-मीठे रूहानी बच्चे अब जान गये हैं कि हमको अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल रहा है,
    - जिस तीसरे नेत्र से तीनों कालों, तीनों लोकों को तुम जान चुके हो।
    - मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन के आदि-मध्य-अन्त को भी जान चुके हो
    - इसलिए बच्चे अपने को त्रिकालदर्शी भी समझते हैं।
  - अभी इस संगम पर रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को कहते हैं तुम अच्छी रीति पढ़ो।
  - हम आत्मायें पहले अपने घर जायेंगे फिर हम शरीर धारण कर सो देवता बनेंगे फिर चन्द्रवंशी घराने में आयेंगे।
  - तुम बच्चों को कहेंगे तुम भारतवासी 84 जन्म लेते हो।
  - मैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ।
    - भृकुटी के बीच में रहती है।
    - उड़ती भी सेकेण्ड में है,
    - बुद्धि में समझ है - हमारी आत्मा ऐसी है।
    - आत्मा को देख सकते हैं, दिव्य दृष्टि से। कोई इन आंखों से देखने की बात नहीं है।
- **परमात्मा**
  - ज्ञान का तीसरा नेत्र सिवाए ज्ञान सागर अमर बाबा के कोई दे न सके।
  - एक ही बार सच सुनाए सचखण्ड का मालिक बनाते हैं।
  - यह है शिवबाबा वा रूद्र ज्ञान यज्ञ। यह अन्तिम यज्ञ है।
  - जिस बाप को पुकारते आये हैं वह हमको बेहद का वर्सा देने के लिए अमरकथा सुना रहे हैं।
  - पुरुषार्थ कराने वाला कौन? अमर बाबा, जिसको अमरनाथ भी कहा जाता है।
  - किस युग में, किस वर्ष में कितने जन्म हुए, बाप ने 84 जन्मों की सच्ची-सच्ची कथा अब सुनाई है।
  - परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं इसलिए ब्रह्मा को प्रजापिता कहते हैं।
- **अमरलोक**
  - रूहानी बाप से अमरकथा सुन रहे हैं इस मृत्युलोक से अमरलोक में जाने के लिए।
  - निर्वाण-धाम को अमरलोक नहीं कहा जाता।
  - अमरलोक जहाँ तुम अकाले मृत्यु को नहीं पाते हो इसलिए उनको अमरलोक कहा जाता है।
  - रूहानी बाप जिसको अमरनाथ कहा जाता है।
    - जरूर अमरलोक में ले जाने के लिए मृत्युलोक में कथा सुनायेंगे।

ज्ञान

- **तुम जानते हो**
  - तुम जानते हो इस झूठ खण्ड को आग लगनी है।
  - तुम जानते हो हम अमरपुरी में अब जा रहे हैं।
    - बाकी थोड़े मिनट का अब रास्ता है।
  - तुम जानते हो हम आत्मायें भविष्य में सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।
  - तुम जानते हो इस ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है, इसमें सारी दुनिया स्वाहा हो जानी है।
- **भक्ति मार्ग**
  - भक्ति मार्ग का कितना विस्तार है। जैसे झाड का बड़ा विस्तार होता है
  - वैसे ही भक्ति का भी बड़ा कर्मकाण्ड का झाड है। यज्ञ, व्रत, नेम,जप-तप आदि कितना करते हैं।
  - इस जन्म के भक्त तो बहुत बैठे हैं। मनुष्यों की वृद्धि होती रहती है।
  - तुम भक्ति मार्ग में आये हो तब से दूसरे धर्म स्थापन हुए हैं।
    - हर एक का अपने धर्म से कनेक्शन है।
    - हर एक की रसम-रिवाज अलग है।
  - भक्ति मार्ग में मनुष्य दु:खी होते हैं तो बाप को ही पुकारते हैं।
  - भक्ति मार्ग में ही साक्षात्कार करते हैं।
    - जैसे रामकृष्ण का शिष्य विवेकानंद था, उसने बताया है मैं सामने बैठा था तो उनकी आत्मा निकल मेरे में प्रवेश हो गई।
- **तीन**
  - मृत्युलोक,अमरलोक ,निर्वाण-धाम
  - अमरकथा, सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा।
  - मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन
  - आदि-मध्य-अन्त
  - रूद्र यज्ञ , गीता यज्ञ , रामायण यज्ञ
  - सतो-रजो-तमो
- **Special points**
  - बाप से हर एक बच्चा वर्सा लेने का हकदार है क्योंकि सब रूहानी बच्चे हो ना।
  - जिससे वर्सा नहीं पाना है, उनको याद नहीं करना है।
  - हम जितने ब्राह्मण बने हैं, अब फिर देवता बनेंगे।
- **Other points**
  - बाप कहते हैं यह तुम्हारा कॉलेज भी है, यज्ञ भी है,दोनों इकट्ठे हैं।

योग

- एक शिवबाबा को ही याद करना है। उनको ही कहते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे।
- अब आधाकल्प के लिए बाबा तुमको सब दुःखों से छुड़ाते हैं। तो कितना प्यार से ऐसे बाप को याद करना चाहिए।
- बाप से बेहद का वर्सा मिलता है, उसे ही याद करना है। किसी देहधारी को नहीं।
- जिस बाप से बेहद का वर्सा मिलता है, उसे ही याद करना है।

धारणा

- इस पुरानी दुनिया को आग लगनी है इसलिए इसे देखते भी नहीं देखना है।
- यहाँ तुम बच्चे सुनते हो तो कितनी कमाई करते हो 21 जन्म के लिए, विचार करो।
- सचखण्ड का मालिक बनने के लिए सच्ची कथा सुननी और सुनानी है।
- अपने को एक तो ब्राह्मण समझना पड़े। मम्मा बाबा कहते हो ना।